जैन इतिहास में प्रथम बार एक साथ चार मुनिराजों को मिली आचार्य पद की दीक्षा

बेटों को मैंने पत्र लिखा था कि तुम आओ मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ । उन्होंने आज्ञा का पालन किया और दौड़े चले आये - आचार्य पुष्पदंत सागर

सोनकच्छ । जो मुस्कुराहट मेरे शिष्यों के चेहरे पर छलकती है उनकी इस मुस्कान से मुझे संबल मिलता है । आज मेरे प्रिय पुत्र आज इस संसार में होते तो उनको भी आज में कुछ देता । बाप के रहते बेटा कैसे चला गया । दुखी हूँ आज यह मेरे पुत्र प्रज्ञासागर, सौरभसागर भी यहां होते तो चार की जगह छः पुत्र मेरे साथ होते । जब में बाकी शिष्यों से मिलूंगा तो उन्हें भी सुशोभित करुंगा । इस पुष्पगिरी का जो स्वरुप आप देख रहे है मेरे बेटे प्रसन्नसागर ने किया है । मैं खुश हूँ मेरे बेटों को मैंने पत्र लिया था कि तुम आओ, मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ । उन्होंने आज्ञा का पालन किया और दौड़े चले आये । यह बात पुष्पगिरी प्रणेता आचार्य श्री पुष्पदंत सागरजी महाराज ने पंचकल्याणक प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के तीसरे दिन व पंचाचार भगवत पद संस्कार महोत्सव कार्यक्रम में उपस्थित भक्तों से कही ।

उन्होंने कहा कि मैं आज इस भरी सभा में प्रशासन, विद्वानों, पंडितों, समाज, भक्त व संघ के सभी व्रतियों की आज्ञा लेकर अपने चार पुत्रों को आचार्य पद देना चाहता हूँ उन्हें कुछ जिम्मेदारियां देने का वक्त आ गया है और यह घोषणा करता हूँ कि आज से मेरे प्रिय पुत्र क्रांतिकारी राष्ट्रसंत मुनिश्री तरुणसागरजी महाराज आज दुनिया में नहीं लेकिन मैं उन्हें भी आज आचार्य बनते देखना चाहता हूँ आज से वे क्रांतिकारी राष्ट्रसंत आचार्य तरुणसागर के नाम से जाना जावे । यह सुनते ही तरुणसागर के इकलौते शिष्य क्षुल्लक श्री पर्वसागर की आंखे छलक उठी । आचार्य श्री ने कहा मेरे और भी पुत्र है मुनि प्रज्ञासागर, सौरभसागर सहित अन्य मुनियों से जब मिलूंगा तो उन्हें भी सुशोभित करुंगा।

पंचाचार भगवत पद संस्कार महोत्सव को प्रारंभ कर आचार्यश्री पुष्पदंतसागरजी महाराज ने अष्टकुमारियों बनी कन्याओं से चौक पुराव की मांगलिक क्रियाएं करवायी । मुनि प्रसन्नसागर, पुलकसागर, प्रमुखसागर व प्रणामसागर महाराज को चौकी पर

बैठाकर आचार्य गुरु पुष्पदंतसागरजी महाराज ने मंत्रोच्चार के साथ अपने शिष्यों के आचार्य पद के अपने शिष्यों के आचार्य पद के संस्कार करवाते हुए अपने शिष्यों से भरी सभा में आचार्य की पदवी से विभूषित किया। जिसके बाद पूरा पंडाल नवीन आचार्य बने मुनियों की जय जयकार से गूंज उठा । सभी मुनियों को नवीन

लकड़ी की चौकियों पर बैठाकर आचार्य पद आसान ग्रहण करवाया। आचार्य संस्कार के बाद मुनि प्रज्ञसागर सहित अन्य संत की मौजूदगी नहीं होने से अंर्तमना प्रसन्नसागर गुरुदेव भावुक होकर आँखे छलक उठी।

विदेशी मेहमानों ने दिये मानवीय संवेदनाये के लिए पहली बार दिगम्बर जैन संत को अवार्ड - पहली बार किसी जैन संत को मानवीय संवेदनाये व मानव कल्याणकारी कार्य हेतु अवार्ड दिया गया। यह अवार्ड डोनाल्ड ट्रम्प के भेजे हुए दूत द्वारा गुरुजी को दिया गया । मुनि पीयूष सागर की भक्त थाइलैंड से पधारी सथित कुमारन व अफिनिता चैचना थाइलैंड नीरज जैन बैंकाक, सतीश शाह नई जर्सी द्वारा पूज्य गुरुदेव के दर्शन कर आशीर्वाद लिया व विदेश से लाये गये स्मृति चिन्ह भेंट किया ।

जेल में ऐसे बदल रहा है कैदियों का जीवन

राजेश जैन, भोपाल । मध्यप्रदेश की सागर जेल शायद देश की पहली जेल है जहां के लगभग 100 से अधिक कैदियों को उनका जीवन बदलने के लिए किसी संत ने गोद ले रखा हो। जेल में ही इन कैदियों को रोजगार देने के लिए लगभग 1 करोड़ रुपये की लागत से बड़ा सेट लगाया गया है जिसमें 60 हैण्डलूम लगाये गये है । कैदी इन हैण्डलूमों के जरिए साड़ी, कपड़ा, दरी, रुमाल और राखियां ही बनाने का काम न हीं करते यहां उनके जीवन के रुपांतरण की पूरी प्रक्रिया चल रही है । आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की प्रेरणा से जेले के 200 से अधिक कैदियों का जीवन पूरी तरह बदल चुका है। उनके बदले हुए व्यवहार का परिणाम है कि 43 कैदियों को न्यायालय ने जमानत दे दी है । जेल में कैदियों की बनाई साड़ियों की मांग अमेरिका तक है ।

पिछले साल आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ने जेल में बंद कैदियों के कल्याण के लिए जैन समाज को आगे आने की प्रेरणा दी थी। इसके बाद जेल विभाग के महानिदेशक संजय चौधरी ने डिण्डोरी में आचार्यश्री से मुलाकात की । तय हुआ कि कैदियों के जीवन के रुपांतरण की प्रक्रिया के लिए सागर से शुरु की जाये। कैदियों को जेल में व्यस्त रखने के लिए जैन समाज हैण्डलूम लगाये और कैदियों को ना केवल प्रशिक्षण दिया जाए बल्कि उन्हें रोजगार भी उपलब्ध कराए जाएं। देखते देखते समाज ने सागर जेल में लगभग 1 करोड़ रुपये की लागत से 11 हजार वर्गफीट का विशाल सेट तैयार कर दिया और उसमें 57हैण्डलूम भी लगा दिए । खास बात यह है कि सेट बनाने से लेकर हैण्डलूम लगाने तक कैदियों ने जमकर मेहनत की। जैन समाज ने सक्रिय समय दर्शन सहकार संघ बनाकर राज्य सरकार से विधिवत अनुबंध भी किया । अनुबंध के तहत कैदियों को रोजगार देने के साथ साथ उनके द्वारा बनाई गई हर साड़ी पर 50 रुपये जेल विभाग के कैदी कल्याण कोष में जमा कराना अनिवार्य किया गया। जैन समाज की ओर से कैदियों को प्रशिक्षण देने और पूरी योजना के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी डीएसपी की नौकरी छोड़ने वाली ब्रह्मचारिणी डॉ. रेखा दीदी, डॉ. नीलम दीदी और डॉ.अमित जैन राजा भैया को सौंपी गई । प्रतिदिन सुबह उन्हें नैतिक शिक्षा, ध्यान योग कराए जाएं और शाम को संगीतमय भजन के कार्यक्रम किए जाएं । यह भी तय हुआ कि

कैदियों द्वारा बनाए गए सभी कपड़े पूरी तरह अहिंसक धागे से और अहिंसक तरीके से बनाए जाएंगे । यानि यहां माहेश्वरी, चंदेरी पेटर्न की साड़ियां तो बनेगी ही लेकिन रेशम जैसे धागे का उपयोग नहीं किया जाएगा जिसमें जीव हिंसा होती हो । यह भी तय हुआ कि इसमें वे ही कैदी काम कर सकेंगे जो आजीवन मांस, मदिरा, गुटखा, तंबाकू जैसे व्यसनों का त्याग करेंगे। जैन समाज ने लिखकर दिया है कि हैण्डलूम पर काम करने वाले कोई भी कैदी जेल से रिहा होगा तो उसे जैन समाज की ओर से एक हैण्डलूम और।6 मीटर साड़ी बनाने का धागा मुफ्त दिया जायेगा।

Astrological Gemstone
(राशि रत्न)
Abhiraj Jain
Gemologist (IGI, GIA)
Specialist- Diamond & Pearl
Cell : 97547-25555

Working Hours 1 To 7 PM

■ Coloured Gem Stones Jewellery
■ Loose Diamond & Solitaire
■ 100% Natural Gem Stones
Certified Gemstone

GII

Certified- Real Diamond & Coloured Gemstone

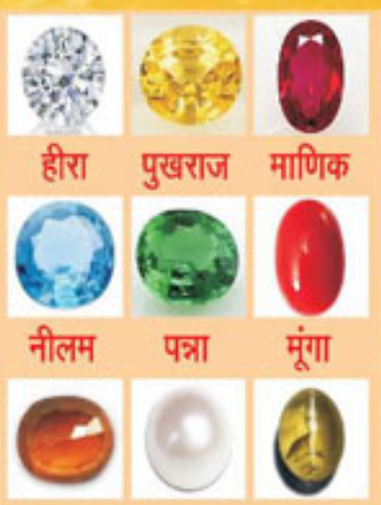

Jariwala Diamond

रत्नों को ऑनलाईन मंगानें के लिये सम्पर्क करें । मो. 9754725555

90, जरीवाला मार्केट, लखेरवाड़ी, उज्जैन (म.प्र.)
Mobile : 9754725555, 9826021234, E-Mail : jariwaladiamond@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है, सम्पादक मण्डल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है । किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

स्वामी श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास के लिए प्रकाशक, मुद्रक बाहुबली जैन द्वारा प्रकाशित प्रतीक्षा ग्राफिक्स127, देवी अहिल्या मार्ग इन्दौर से मुद्रित एवं ग्राफिक्स ज़ील कम्प्यूटर एंड ग्राफिक्स 356, तिलक नगर श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित